आर्योदया

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Weekly Aryodaye No. 364 ARYA SABHA MAURITIUS *1st June to 7th June 2017*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म् सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभय सह । विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते ।

यजुर्वेद ४०/११

Om ! Sambhootim cha vināsham cha yastadvedobhayam saha. Vināshena mrityum tirtvā sambhootyāmritamashnute.

Yajur Véda 40/11

Glossaire / Shabdārtha :

yaha – L'homme qui s'adonne

sambhootim - (i) à la vie sociale, à la dévotion spirituelle, à l'humanisme
(ii) le monde / l'univers (shrishti)

cha - et

asambhootim / vināsham - (i) à l'individualisme,à l'ascétisme – en se détachant de tout lien familial et du monde matériel.
(ii) la matière élémentaire primordial (prākriti) - l'état de l'univers après la grande dissolution (pralaya)

tat ubhayam – ces deux modes de vie

saha veda - celui qui pratique simultanément (en même temps)

vinashena – l'individualisme et l'ascétisme

mrityu tirtvā – il peut vaincre la mort

sambhootyā - avec la vie sociale, l'humanisme et la dévotion spirituelle.

amritam ashnute - il peut atteindre le bonheur suprême / la félicité éternel (moksha) par de efforts appropriés /spécifiques.

Interprétation / Anushilan

Le thème principal de ce verset est étroitement lié aux deux mots clés suivants : "Sambhootim" et "Asambhootim" ou "Vināsham".

Tout d'abord il faut que l'on ait une notion de ces deux mots clés, voire de ces deux modes de vie ou de ces deux facteurs importants et leurs apports considérables menant à la liberation de l'âme du cycle de la vie et de la mort – c'est-à-dire au but ultime du parcours terrestre de l'homme.

sambhootim ('samājvāda) veut dire : la vie sociale – vivre ensemble en restant dans les normes de la société, en adoptant la culture de l'humanisme et en pratiquant la dévotion spirituelle.

De par sa nature l'homme est un être sociable. Il vit en famille, en groupe ou en société avec l'esprit d'entraide et la pratique de la spiritualité. Il ne peut vivre autrement dans le monde.

D'ailleurs cette manière de vivre aide à créer l'unité, la solidarité et la fraternité dans la société et dans le pays. Elle constitue une force immense sur laquelle le pays peut compter, pour faire face et venir à bout des ennemis puissants et des problèmes qui peuvent surgir à n'importe quel moment. (*cont. on pg 4)*

N. Ghoorah

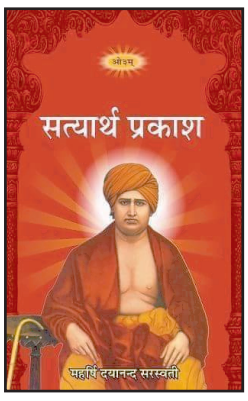

सत्यार्थप्रकाश मास

डॉ० उदयनारायण गंगू,ओ.एस.के.,जी.ओ.एस.के.,आर्य रत्न, प्रधान आर्य सभा

१२ जून सन् १८७४ में वेदोद्धारक एवं आर्यसमाज के संस्थापक, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ - 'सत्यार्थप्रकाश' का प्रणयन हिन्दी भाषा में प्रारम्भ किया था। कुछ ही काल के अनन्तर यूरोप की प्रमुख भाषाएँ-अंग्रेज़ी, फ्रेंच और जर्मन, अफ़्रीका की स्वाहिली, चीन देश की चीनी, भारत की संस्कृत, तमिल, तेलगू, कन्नड़, गुजराती, मराठी, सिंधी, उड़िया, बंगला, उर्दू आदि में यह ग्रन्थ अनूदित हुआ और इसने अनगिनत जनों के मन-मस्तिष्क को प्रकाशित कर डाला।

वर्ष १८७४ से अब तक इस ग्रन्थ-रत्न के सैकड़ों संस्करणों का प्रकाशन होता रहा है और भविष्य में भी होता रहेगा। महाकवि गोस्वामी तुलसीदास के महाकाव्य - 'रामचरितमानस' को छोड़कर कोई और ऐसा भारतीय ग्रन्थ नहीं, जिसके संस्करण 'सत्यार्थप्रकाश' से अधिक निकले हों।

गुरु विरजानन्द से विदा लेकर महान् क्रान्तदर्शी दयानन्द जब कार्य-क्षेत्र में उतरे तब वे विविध कार्यों में इतने व्यस्त हुए कि अपने जीवन के अंतिम क्षण तक अपनी मातृभूमि की दुर्दशा को बदलने में ही अपना सर्वस्व समर्पित कर गए। उन्हें विदेश-यात्रा का अवकाश मिला ही नहीं। विदेश-यात्रा का सौभाग्य उनके स्वरचित ग्रन्थों को प्राप्त हुआ। 'सत्यार्थप्रकाश' ने भारत की सीमा को पार करके अनेक देशों में आर्यसमाज की अग्नि प्रज्वलित की। इस ग्रन्थ की एक चिंगारी ने वन की अग्नि की भाँति मॉरीशस की धरती पर फैलकर साढ़े चार सौ आर्यसमाज की शाखाएँ स्थापित कर दीं।

कुछ दशक पूर्व आर्यसभा ने जून मास को 'सत्यार्थप्रकाश मास' घोषित किया। तब से अब तक जून के महीने में सत्यार्थप्रकाश के विशेष पठन-पाठन की प्रेरणा सबको दी जाने लगी है। शाखा-समाजों में सत्यार्थप्रकाश पर प्रवचन, विद्यालयों और महाविद्यालयों में छात्र-छात्राओं को और रेडियो-टेलीविजन पर आम जनता को विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से सन्देश दिये जाते हैं। पत्र-पत्रिकाओं पर लेख एवं अन्य साहित्यिक विधाओं के द्वारा 'सत्यार्थप्रकाश' की शिक्षाओं से अवगत कराया जाता है।

सत्यार्थप्रकाश ऋषि-बुद्धि से उद्भूत ऐसा ज्ञान है, जो पाठकों और श्रोताओं की आत्माओं को आलोकित कर देता है। प्रार्थना है कि ज्ञान के पिपासु जन कम-से-कम जून मास में एक बार इस ग्रन्थ का स्वाध्याय करके ऋषि दयानन्द के ऋण से उऋण होने का अवश्य प्रयत्न करें। निश्चयतः इसके ज्ञान से बुद्धि निर्मल होगी।

सम्पादकीय

वेद मंथन का मोती

वेद ईश्वर की वाणी है। वेद चार हैं। ऋग्वेद जो ज्ञान-काण्ड है, यजुर्वेद जो कर्म-काण्ड है, सामवेद जो उपासना-काण्ड है और अथर्ववेद जो विज्ञान-काण्ड है। सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने अग्नि ऋषि को ऋग्वेद का, वायु ऋषि को यजुर्वेद का, आदित्य ऋषि को सामवेद का और अंगिरा ऋषि को अथर्ववेद का सत्य-ज्ञान अर्पित किया। उन महात्माओं द्वारा सुनने- सुनाने के माध्यम से अन्य महर्षियों को चारों वेदों का ज्ञान कंठाग्र हुआ। इसी प्रकार वेद-विद्या फैलती रही और कालांतर में चारों वेद ग्रन्थाकार में पाठकों के सामने आए ।

कालचक्र के अनुकूल कई संस्कृतज्ञ उपवेद, वेदांग, उपनिषद्, शास्त्र आदि – धार्मिक ग्रन्थों की रचना करने लगे और वैदिक विद्याएँ फैलती गईं। फिर महाभारत युद्ध में अनेक प्रकाण्ड विद्वानों के मारे जाने पर वेदों का गहरा अध्ययन करने वाले ओझल होने लगे और अविद्याएँ मानव-समाज को विनाश की ओर पहुँचाती रहीं, ऐसी गम्भीर स्थिति में वेद-विद्या लुप्त होने लगी थी।

आधुनिक काल की १९ वीं सदी में वेदोद्धारक देवर्षि दयानन्द ने बड़ी गहराई के साथ वेद-मंथन किया और सत्य-विद्याओं से मानव जाति को आलोकित किया । वे वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर प्रचार-प्रसार करते रहे। वे अपने सारगर्भित प्रवचनों के साथ ही शिक्षाप्रद ग्रन्थों की रचना करते रहे, जिनमें 'सत्यार्थप्रकाश' एक सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है, जो लगभग २५ भाषाओं में अनुवादित है।

वेदों में जिस प्रकार ज्ञान, कर्म, उपासना तथा विज्ञानादि विषयों की सत्य विद्याएँ हैं, उसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश में वेदों पर आधारित सच्चा और शाश्वत ज्ञान संगृहीत है। क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी विद्वत्ता के बल पर चारों वेदों का मंथन करके जो ज्ञान रूपी मोती प्राप्त किया, उसे चौदह समुल्लासों में पिरो दिया है। अपने जीवन को चमकाने के लिए हमें उस ज्ञान स्वरूप मोती को ग्रहण करना चाहिए।

सत्यार्थप्रकाश का पठन-पाठन करने से मनुष्य की बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धि होती है। वह स्वस्थ, बलिष्ठ तथा आनंदित होकर वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उन्नति में पूरा सहयोग देने में सफल होता है। इस ज्ञानागार से हम जितना ज्ञान ग्रहण करने के अभ्यासी होंगे, उतना ही हमारा कल्याण निश्चित है। जो भी व्यक्ति बड़ी लगन के साथ इस कालजयी ग्रन्थ का स्वाध्याय करता, उसका भाग्योदय हो जाता है। अतः सत्यालोक पाकर अपने और अन्यों का भाग्य जागरित करना प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्तव्य है।

हम स्वाध्यायशील प्राणी हैं। हम जीवन पर्यन्त उत्तम ज्ञान की तलाश में लगे रहते हैं, क्योंकि सत्य विद्याओं द्वारा हम सही और ग़लत तथा सत्यासत्य की पहचान करने में सक्षम होते हैं। अन्यथा अज्ञानतावश हमारा पतन निश्चित है।

वेद-विद्या के अभाव में जिस प्रकार मानव समाज पतनावस्था में आ जाता है, उसी प्रकार आज सत्यार्थप्रकाश तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों के पठन-पाठन किए बिना हमारा पतन स्वाभाविक रूप से हो रहा है। इस तनावपूर्ण दुनिया में हमें सत्य ज्ञान प्राप्त करने की अति आवश्यकता है। जिस प्रकार मोती की खोज में बड़े-बड़े विशेषज्ञ सागर की गहराई में बड़ी कठिनाई से बहुमूल्य मोती की छान-बीन करते हैं, उसी प्रकार हमें भी बड़ी चतुराई के साथ सत्यार्थप्रकाश के ज्ञान-भण्डार से मोती स्वरूप ज्ञान की गहरी खोज करनी चाहिए तभी हमारी बौद्धिक-सम्पत्ति की वृद्धि होगी।

आगामी सोमवार १२ जून को सत्यार्थप्रकाश जयन्ती है। इसी संदर्भ में आर्य सभा ने जून मास को सत्यार्थप्रकाश मास घोषित किया है। अतः हम अपने समस्त पुरोहित-पुरोहिताओं, विद्वानों, प्रचारकों, वक्ताओं, गुरुजनों तथा शाखा-समाज के अधिकारियों से निवेदन करते हैं कि आप इस सत्य-ज्ञान रूपी सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ से ज्ञानमय मोती ढूँढ़ते रहें और उस चमकदार मोती से अन्यों को चमकाते रहें, तभी हमारे जीवन का सुधार होगा और अन्यों का उपकार होगा ।

बालचन्द तानाकूर

हिन्दी संस्थाओं का महासंघ

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

हिन्दी संस्थाओं के महासंघ की ओर से सोमवार दि० १५.०५.२०१७ को प्रातःकाल १०.०० बजे ग्राण्ड ब्लू होटल त्रूओ बीश में हिन्दी को वैश्विक मान्यता देने हेतु एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया था। उस समारोह में भारत सरकार के कैबिनेट मिनिस्टर माननीय कलराज मिश्र जी उपस्थित थे। मॉरीशस सरकार के कला और संस्कृति मंत्री प्रदीप सिंग रूपण अपने स्थायी सचिव श्रीमती लखीनारायण के साथ उपस्थित थे। आर्य सभा का प्रतिनिधित्व प्रधान डा० उदयनारायण गंगू, महा मंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम, उपकोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्रप्रसाद रामजी एवं डॉ० जयचन्द लालबिहारी कर रहे थे।

मौक़े पर, हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्य सभा की भूमिका पर महामंत्री सत्यदेव प्रीतम का उद्‌बोधन इस प्रकार हुआ – मंत्री महोदय ! गण्यमान्य उपस्थित जन ! आर्यसमाज ने अपने जन्मकाल के पहले ही से हिन्दी का प्रचार करना आरम्भ कर दिया था। विगत शती के अन्तिम वर्षों में मॉरीशस को स्वामी दयानन्द द्वारा विरचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश प्राप्त हुआ, जो खड़ी-बोली हिन्दी में था। जिन तीन लोगों को सत्यार्थप्रकाश पढ़ने का मौक़ा मिला उन तीनों ने आर्यसमाज की स्थापना करने का प्रयास किया।

स्वामी दयानन्द ने ब्राह्म समाज के तरुण नेता केशवचन्द्र सेन के कहने पर बहुत अल्प समय में हिन्दी सीखी और १२ जून सन् १८७४ में सत्यार्थप्रकाश का श्रुतिलेख करना आरम्भ किया। स्वामी जी का नाम इस प्रकार खड़ी बोली के गद्य-लेखन में आ गया। वह भारतेन्दुकाल था, हिन्दी साहित्य के इतिहास में।

२० वीं शताब्दी के आरंभ में मोहनदास करमचन्द गांधी का आगमन हुआ। उन्होंने भारतीय मज़दूरों और छोटे किसानों की दयनीय दशा देखी और तुरन्त सोच लिया कि उन्हीं जैसे एक बैरिस्टर को यहाँ आना चाहिए। उनके द्वारा भेजे गए – मणिलाल डॉक्टर आए। वे गाँव-गाँव, शहर-शहर में जाकर भारतीय जनता को हिन्दी में सम्बोधित करते थे। चार वर्षों के ठहराव के बाद वर्मा में उनकी मुलाक़ात रोग चिकित्सक डा० चिरंजीव भारद्वाज से हुई। उनके कहने पर १९१२ के दिसम्बर मास में डॉक्टर भारद्वाज सपरिवार मॉरीशस आ गए।

मणिलाल ने अपने मॉरीशस प्रवास के दौरान हिन्दी और अंग्रेज़ी में 'हिन्दुस्तानी' नाम की पत्रिका निकाली थी और मॉरीशस छोड़ते वक्त अपना प्रेस वे आर्य प्रतिनिधि सभा को दे गये थे। उनके जाने के बाद डॉ० चिरंजीव भारद्वाज के सहयोग से स्थानीय आर्यसमाज ने आर्य पत्रिका निकालना आरम्भ किया। उनके रहते यहाँ ४० से अधिक आर्यसमाज की स्थापना की गई, जिनमें हिन्दी की सायंकालीन या रात्रि की पाठशाला चलती थी। डॉ० जी दिन में मरीज़ों की सेवा करते और रात्रि में गाँव-गाँव में जाकर सामाजिक सेवा करते। हिन्दी में वेद-मंत्रों पर व्याख्यान देते थे। उनके साथ उनकी धर्म पत्नी श्रीमती सुमंगली देवी लड़कियों एवं महिलाओं को हिन्दी पढ़ाती थीं और सामाजिक बुराइयों और अन्धविश्वासों को दूर करने की माँग करतीं। इन्हीं लोगों के प्रयास से भारत से पं० आत्माराम विश्वनाथ का आगमन हुआ ताकि हिन्दी पत्रों का सुसम्पादन हो सके। तभी से मॉरीशस में हिन्दी का प्रचार होना आरम्भ हुआ। अज्ञानता को दूर करने के लिए 'हिंदुस्तानी' को एक सशक्त माध्यम बनाया गया। अब पंडित लोग सत्नारायण स्वामी की कथा बाँच कर हिन्दी में उपदेश देने लगे। सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव दिनो-दिन बढ़ने लगा।

१९२५-२६ में मोंताईं लौंग में तिलक विद्यालय खोला गया, जो आगे चलकर हिन्दी प्रचारिणी सभा बना । एक तरफ़ धर्म और संस्कृति का प्रचार-प्रसार, ज़ोर-शोर से होने लगा, दूसरी तरफ़ हिन्दी साहित्य का; कहानी लेखन, नाटक की रचना प्रारम्भ हुई, धीरे-धीरे लोग कविता भी लिखने लगे। सन् १९३५ में हमारे पूर्वजों के आगमन की शताब्दी समारोह पूर्वक मनाई गई। आर्य सभा में उत्सव मनाया गया, जिसमें न केवल आर्य समाजियों ने भाग लिया, अपितु सभी भारतीय मूल के लोगों ने दिल खोलकर भाग लिया।

प्रवासी भारतीयों के घर में जन्मे लड़के विदेश से उच्च डॉक्टरी व बैरिस्टरी शिक्षा पढ़कर आने लगे। फ़्रांस, इंग्लैण्ड व भारत में जिस प्रकार लोग मत दान देकर अपनी सरकार बनाते थे। यहाँ भी वोट देने की माँग का आन्दोलन चलने लगा। यहाँ पर वे ही लोग वोट डालते थे, जिनके पास धन होता था या जो पढ़ना-लिखना जानते थे। ब्रिटिश सरकार से सभी वयस्क लोगों को मताधिकार की माँग होने लगी। हमारे लोगों ने माँग की कि जो भी २१ वर्ष का व्यक्ति अपना हस्ताक्षर दे सकता, उसे वोट देने का अधिकार मिलना चाहिए। हमारे लोग बहुसंख्या में थे, पर अक्षर का ज्ञान तक नहीं था। आर्यसमाज ने दूसरों को साथ लेकर घर-घर पहुँचकर और लोगों को अपना नाम लिखना सिखाया। मान लिया जाय किसी का नाम 'रूपण' हो उसे कैसे बोलेंगे रू प ण लिखो। उसने तो 'र' कभी सुना ही नहीं था। एक काग़ज़ के टुकड़े पर 'रूपण' लिखकर दिया गया, या जिसका जो नाम था उसी नाम का चित्र बनाकर दिया गया और उससे कहा गया यह तुम्हारा नाम है, लिखना सीख जाओ। मॉरीशस भर घूम-घूम कर नाम लिखना सिखाया गया और ११,००० वोटर से बढ़कर ७७,००० मतदाता हो गये। सन् १९४८ में चुनाव हुआ। १९ मेंबरों में हमारे लोग १८ सफल हो गए। केवल एक गोरे की जीत हुई और इस प्रकार केवल २० वर्षों में १२ मार्च १९६८ में हमें आज़ादी मिल गयी। इस आज़ादी की लड़ाई में हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं ने बहुत भारी भूमिका निभाई, जिसमें आर्यसमाज का बड़ा हाथ रहा। यह सभी लोग मानते हैं।

आज भी आर्य सभा मॉरीशस हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ सामाजिक-सेवा और वैदिक सिद्धान्त के विकास में आगे बढ़ रही है और भविष्य में ऐसा ही करती रहेगी।

OM

Pamplemouses Arya Zila Parishad

Programme on Satyarth Prakash

04.06.17 - T. Boutiques Arya Mandir,Triolet 8.30 a.m.
" - MonGout Nawjeewan A.S. 8.00 a.m
07.06.17 - Derning A.M.S 1.00 p.m.
09.06.17 - Morc. St. Andre 4.00 p.m.
" - Petite Pte aux Piments A.M.S10.00a.m.
10.06.17 - " A.S. 1.00 p.m.
" - Fond du Sac A.M.S 2.00 p.m.
11.06.17 - Trois Boutiques A.S. Triolet 8.30 a.m.
" - Derning A.S. 3.30 a.m.
13.06.17 - 9eme Mile Triolet A.M.S 1.00 a.m.
" - Grde Pte aux Pimets A.S. 5.30 p.m.
14.06.17 - Triolet A.S 3.00 p.m.
16.06.17 - Morc. Hamlet A.S. 6.00 p.m.

Pta Vidwantee Jahul ..... to be continued

लावेनीर आर्यसमाज के दो सदस्य सरकार द्वारा सम्मानित

श्रीमती लीलामणि करीमन, एम.ए., वाचस्पति

सरकार प्रतिवर्ष स्वतन्त्रता एवं गणतंत्र दिवस के अवसर पर गण्यमान्य लोगों को उनकी सेवाओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उन्हें सम्मानित करती है। लावेनीर आर्यसमाज एवं आर्य महिला समाज के लिए गर्व की बात है कि इस साल यहाँ के दो सदस्यों को औपचारिक सम्मान प्राप्त हुआ। पहला है - श्रीमती रामावती रामधनी जी और दूसरा हैं, डॉ० जगदीशचन्द्र मोहित जी।

सर्वप्रथम श्रीमती रामावती रामधनी जी की सामाजिक सेवा पर कुछ प्रकाश डाला जा रहा है। परिवार और घरेलू दिनचर्या के बीच में रामावती रामधनी जी का समाज-सेवा-कार्य भी सम्मिलित है। वे शायद ही कभी समाज-कार्य में चुक जाती है।

यदि कोई विदेशी विद्वान् लावेनीर आर्यसमाज के अतिथि-कक्ष में ठहरे हों, तो उनके आतिथ्य का पूरा भार श्रीमती रामावती ले लेती हैं। चाहे आँधी हो या तूफ़ान, तेज़ हवा बह रही हो या मूसलाधार वर्षा, सरदी हो या कड़ी धूप श्रीमती जी स्वयं भोजन पहुँचाती, मेहमान को खिलाती फिर जूठे बरतन बटोरकर और अतिथि के मैले कपड़े धोने-धुलाने के लिए लेकर घर वापस जातीं। यदि मेहमान किसी अन्य गाँव में कार्यक्रम के लिए गए हों तो वे बार-बार बच्चों से फ़ोन करवातीं और पता लगवातीं कि भोजन की व्यवस्था हुई है या नहीं। चाहे आधी रात हो, आवश्यकता पड़ने पर वे मेहमान के लिए गरम-गरम भोजन लेकर उपस्थित हो जाती हैं। जब मैंने पूछा – 'दीदी जी इस सेवा-कार्य की भावना आपके अन्दर कैसे जागरित हुई?' तब उन्होंने उत्तर दिया – 'समाज में आना-जाना, यज्ञ-कार्य में भाग लेना, हिन्दी भाषा सीखना, सत्संग आदि सुनना – यह सब हमने बचपन में ही सीखा है। विवाह के बाद जब ससुराल पहुँची तब मैं सासु-माँ के साथ समाज में आने-जाने लगी । हमारे घर पर अक्सर साधु-महात्मा-संन्यासी आकर ठहरते थे। इनकी सेवा करना मैं पसन्द करतीथी। अतः स्वाभाविक रूप से जब-जब अवसर मिलता तब-तब मैं इनकी देख-रेख में लग जाती। कोई भूखे-प्यासे दिन भर रह जाए या रात को भूखे सो जाए तो मुझसे रहा नहीं जाता। ऐसे महानुभावों की सेवा करते हुए, मैंने उनसे भी बहुत कुछ सीखा।

आज मेरा एक समृद्ध परिवार है और पूरा परिवार समाज से जुड़ा हुआ है। मेरे पति की तरह मेरे बच्चे भी दानशील हैं और आर्यसमाज के कर्मठ सदस्य हैं। आर्यसमाज मेरा साहस है, मेरा आत्म-बल है। जब तक हाथ-पाँव चलते रहेंगे, मैं अच्छे कार्य करती रहूँगी।

श्रीमती रामावती रामधनी जी के समान ही डॉक्टर जगदीशचन्द्र मोहित जी लावेनीर आर्यसमाज के सत्संग में नियमित रूप से उपस्थित होते हैं।उन्हें जी.ओ.एस.के. की उपाधि से सम्मानित किया गया। किसी विद्वान् ने क्या खूब कहा है –

प्रदोषे दीपकश्चन्द्रः, प्रभाते दीपको रवि।
त्रैलोक्ये दीपको धर्मः सुपुत्र कुलदीपकः।

अर्थात् रात में चन्द्रमा दीपक का काम करता है, सूर्य प्रातः के समय में दीपक का काम करता है, धर्म तीनों लोगों में दीपक का काम करता है और सुपुत्र अपने कुलों में दीपक का काम करता है।

वेद ने भी निर्देश दिया है – **अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा सम्मनाः।** अर्थात् पुत्र पिता के कर्मों का अनुसरण करनेवाला हो और माता के मन की बातों को पहचान उसके अनुसार आचरण करनेवाला हो। डॉक्टर जगदीशचन्द्र मोहित इन बातों को सार्थक करने वालों में से अपने पिता के एक सुपुत्र हैं। वे कोई और नहीं, अपितु स्वर्गीय श्री मोहनलाल मोहित,आर्य रत्न (आर्यसमाज के सिरमौर) के ज्येष्ठ पुत्र हैं। उनका जन्म सोलह मई सन् १९२९ ई० को लावेनीर गाँव में हुआ था। आज ८८ साल की अवस्था में हर रविवार को किसी भी यज्ञ-कार्य, सत्संग आदि में नियमित रूप से वे कात्र-बोर्न से लावेनीर आर्यसमाज में पहुँच जाते हैं। अपने सुविचारों एवं सौहार्द से वे समाज के सेवा-कार्य में लगे हुए हैं।

पेरिस में **डॉ० जगदीशचन्द्र मोहित** ने डॉक्टरी सीखी (Medical Studies at Faculte de Medecine Paris-France) फिर पोस्ट ग्रेजुएट शिक्षा के लिए होलैण्ड गए

(Royal Tropical Institute, Amsterdam, Holland).

डॉक्टर के रूप में स्वास्थ्य-क्षेत्र में डॉ० जगदीशचन्द जी का लम्बा तथा अच्छा अनुभव है। फरवरी सन् १९६२ में स्वास्थ्य मंत्रालय में डॉक्टर जी की नौकरी लगी, जहाँ से उन्होंने निम्नलिखित रूप में सेवा-कार्य प्रदान किया :–

1. Medical Officer (1962-1969) to perform clinical duties with treatment and care of the sick,
(a) at Civil Hospital (Now Jeetoo Hospital)
(b) at Queen Elizabeth Hospital in Rodrigues
(c) at Flacq Hospital
2. Medical Superintendent at Sir Seewoosagar Ramgoolam National Hospital (1969-1973): Responsible for the Management of Health Care Services at the hospital and the annexed dispensaries.
3. Principal Medical Officer and later Chief Medical Officer at Head quarters of Ministry of Health and Quality of Life (1973-1989) : Responsible for the Planning and Development of Health Services.
4. Commissioning of Jawaharlall Nehru Hospital (1989-1990) : Responsible for making operational all the departments of the hospital.
5. Executive Director -- Mauritius Institute of Health (1994-2014) : Responsible for the basic and post based training of Health Personnel and for the conduct of Health Services Research

डॉक्टर जी ने निम्नलिखित क्षेत्रों में भी ऊँचे पदों पर आसीन होकर अपनी सेवा प्रदान की है –

(1) Member of United Nations Population Commission (1985-1989)
(2) Member of the Executive Board of World Health Organisation (W.H.O.) - (1987 - 1990)
(3) Member of Senate, University of Mauritius (2001-2005)

स्वास्थ्य सेवा-कार्यों के लिए आपको निम्नलिखित पुरस्कार एवं मान-पत्र प्राप्त हुए :–

1. C.B.E. -- January 1990
2. Honorary Fellow University of Mauritius (2001)
3. G.O.S.K - March 2017

आज अठासी साल की अवस्था में भी आप समाज-कार्य में लगे हुए हैं। आपके ओठों की स्थायी मुस्कान लोगों को 'मोहित' कर लेती है। आपका सरल स्वभाव जनता को अपनी ओर आकृष्ट करता है। ईश्वर करे कि पिता-सम आपको भी शतायु प्राप्त हो। **अदीनाः स्याम शरदः शतम् भूयश्च शरदः शतात्।**

हमारे धर्म की विशेषताएँ

पंडित जयनारायण गजाधर, शास्त्री

परमपिता परमेश्वर से वेद-ज्ञान उत्पन्न हुआ। यह ज्ञान गुरु-शिष्य परम्परा से अग्रसर होता रहा। ज्ञान आत्मा का विषय है। आत्मा चेतन है, ज्ञान स्वरूप है, अल्पज्ञ तो है, मगर ज्ञान शून्य नहीं है। ज्ञानों में सर्वश्रेष्ठ ज्ञान अपौरुषेय वेदों का है, जिसमें कोई भी भ्रान्ति नहीं है, जो सर्वभावेन परिपूर्ण है। इसी लिए हमारे मार्ग दर्शक ग्रन्थ वेद ही है। वेदों के अनुसंधान में ऋषि-मुनि, ज्ञानी-ध्यानी,साधु-सन्त तपस्या में रत रहे। तप का परमाणु जब तक जीवित है, तब तक वैदिक धर्म जीवित रहेगा।

हमारे धर्म की पहली विशेषता है- अपनी आत्मा को देखना और अपनी आत्मा जैसे सबको देखना। द्वैत को मिटाना, अद्वैत में स्थित होना, अपने आप को जगाना, संकीर्णता को हटाना, उदारता को अपनाना, क्षुद्रता को भगाना, व्यापकता को लाना, अनेकता में एकता के दर्शन करना, शत्रुता को मिटाना और मित्रता को बढ़ाना। हमारा धर्म कहता है कि सब झंझटों की जड़ द्वैत है। जहाँ द्वैत है, वहाँ दुख है। जहाँ अद्वैत है, वहाँ विजय है, श्रीः है, यश है, समृद्धि है, वैभव है। जहाँ द्वैत है, वहाँ कलह है, विनाश है। मृत्यु है, रोग है, शोक है, अशान्ति है। जब दो व्यक्ति द्वैत में स्थित हों तो एक-दूसरे को पराया समझते हैं। यदि एक दूसरे को अपना समझें, तो फिर कौन लड़ेगा ! किससे लड़ेगा ! क्यों लड़ेगा! जहाँ अपनापन है, वहाँ तो झगड़ा हो ही नहीं सकता।

संस्कृत के कवि ने क्या सुन्दर कहा है –

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

अर्थात् उदार हृदय वाले के लिए तो सारा संसार ही अपना परिवार है ।

उनका मुख्य स्वर है,

ईशा वास्यमिदँ सर्वं, यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।।

अर्थात इस सृष्टि-रूपी प्रपंच में जो कुछ गतिमान है, वह सब परमात्मा-शक्ति के द्वारा परिपूरित होता है। उन भोगों को त्याग-पूर्वक भोगते हुए, हम दूसरे के अधिकारों पर छापा न मारें। यह धन किसी का भी नहीं है, उसी का है, जो हिरण्यगर्भ है। लोभ लालच से आज तक किसी का भला नहीं हुआ। उपनिषद् का संदेश है –

एकोवशी सर्वभूतान्तरात्मा एकं रूपं बहुधा यः करोति

एक ही परमपिता परमेश्वर सब प्राणियों को वश में रखने वाला है। वही एक रूप को अनेक रूपों में प्रस्तुत करता है।

वेद आवागमन की पुष्टि करते हुए कहता है –

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वादुत्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति ।

१-१६४-२०

दो समानशील पक्षी इस प्रकृति रूपी वृक्ष पर बैठे हैं। उनमें से एक पक्षी उस प्रकृति के खट्टे -मीठे फलों को खाता है और दूसरा बिना कुछ भोग करते हुए, साक्षी बना रहता है। ये पक्षी आत्मा और परमात्मा हैं। वृक्ष संसार है। खट्टे-मीठे फल पाप और पुण्य हैं। ये हैं ईश्वर की न्याय व्यवस्था। देव-दयालु परमपिता परमात्मा चींटी से लेकर हाथी तक सबकी सुनता है। सबको बार-बार ऊपर उठने का अवसर देता है।

हमारे धर्म की अन्तिम यात्रा है, मोक्ष की प्राप्ति। अन्तिम सोपान में धर्म पहला है, अर्थ दूसरा, काम तीसरा, फिर मोक्ष हमारे धर्म का विश्वास है कि ईश्वर एक है। पृथ्वी के अणु-अणु में, आकाश-पाताल, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, दायें-बाएँ, यत्र-तत्र-सर्वत्र उसकी महिमा दिखाई देती है। आत्मा में संचार, ये सब उसके चमत्कार ही तो है! वह नियामक है, दयालु है, दाता है, भण्डारी है, दुखहर्ता है, पुण्य करने पर हँसाता है और पाप करने पर रूद्र बनकर रुलाता है। धर्म की विशेषता उसकी वैज्ञानिकता है। विज्ञान कहता है कि क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। कर्म का फल अवश्य मिलता है। अच्छे कर्म का फल अच्छा और बुरे कर्म का बुरा। इसलिए कहा गया है –

करता था तब क्यों किया अब कर क्यों पछताय।
बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाय ।।

हम आग में हाथ डालेंगे तो जलेगा। जिसका संग करेंगे, वैसा रंग तो चढ़ेगा ही। इसलिए हमारा धर्म कहता है- हे मानव ! तू सोच-समझकर चल, जैसा करोगे वैसा पाओगे। राम का किया हुआ, राम ही और श्याम का किया हुआ, श्याम ही भरेगा। इस हाथ से दे और उस हाथ से ले। टेप रिकार्ड में जैसा रिकार्ड किया हुआ है, वैसा ही सुनाई देगा। शीशे के सामने जैसा चेहरा होगा, वैसा ही दिखाई देगा। रोनी सुरत को शीशा हँसते सूरत में नहीं बदल सकता। विज्ञान का नियम है कि जो चीज़ जैसी है, वैसी ही दिखाई देती है।

परमात्मा चुम्बक है (magnet) और आत्मा चुम्बकीय है। दोनों में आकर्षण है। इसीलिए संसार में हर जगह मन्दिर, मस्जिद गिर्जाघर, शिवालय, देवालय आदि में हम आत्मा की भूख मिटाने के लिए जाते हैं।

मनुष्य की आत्मा में परमात्मा को जानने की झिज्ञासा, इतनी अधिक है कि अमेरिका जैसे समृद्धिशाली देश ने अपनी डालर पर लिखा है – 'In God we trust'– अर्थात् ईश्वर में मेरा विश्वास है।

इसी लिए कि मानव ने प्रकृति की पूजा करके देखा। जड़ की पूजा से उसे जड़ता मिली। भौतिकता (Materialism) ने उसे सुखी तो किया, पर आनन्दित नहीं किया। आराम दिया पर - चैन नहीं । भोजन दिया, पर भूख नहीं, नर्म गद्दा दिया पर, नींद नहीं। परमात्मा की ओर झुकने से अविनाशी शान्ति, सुख अखंड, आनन्द, सदाबहार वृक्ष के समान उसके जीवन झूम उठेगा। धर्म का विज्ञान दर्शन कहता है कि ईश्वर नियम है, कानून है, उसे समझो, उसके कानून को समझो, उसके स्वभाव को समझो, आत्मा के गुण-स्वभाव को समझो। रचना को जानो और रचनाकार को ना भूलो। कहा गया – 'नेक कमाई कुछ कर प्यारे जो तेरा परलोक सुधरे। इस जग का है, ऐसा लेखा, जैसे रात का सपना देखा। सपने में जो दौलत पाई, आँख खुली तब हाथ न आई। कुटुम्ब कबीला तेरे संग न जाय साथ तेरे एक धर्म ही जाय।' महाभारत में युधिष्ठिर - यक्ष संवाद में यही बताया है कि मरते का साथी कौन है? उत्तर मिला शुभकर्म, पुण्य और उसका धर्म। इसी लिए अपने पुण्य-पाप पर विचार करना चाहिए। धर्म पर विश्वास रखो, क्योंकि, **धर्मो रक्षति रक्षितः** – अर्थात् जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। इसके विपरीत जो धर्म की रक्षा नहीं करता है, धर्म उसको नष्ट कर देता है। **धर्म एव हतोहन्ति** – इसका प्रमाण है।

धर्म के खातिर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपना जीवन दान दे दिया। मृत्यु को ईश्वर का वरदान समझते हुए, कहा कि ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तू ने अच्छी लीला की। मृत्यु को हँसते-हँसते गले लगाया।

शेष भाग पृष्ठ ४ पर

शाकाहारी भोजन द्वारा चेतनत्व, स्वास्थ्य और ताकत

Vegetarian Way of Life

Vitality, Health and Strength through a vegetarian Diet

जयपति पुनीत

Nathaniel Altman कहते हैं कि

The Human body is not a gasoline Engine, but an intricate and wonderful mechanism which is to serve us during our life time. It is the vehicle of expression to others.-- It should be given the food which it was built to consume: a natural diet of fruits, grains, nuts and vegetables.

There are absolutely no grounds to the assertion that man needs meat in order to enjoy vibrant health and active, long and productive life.

मनुष्य का शरीर पीट्रोल से चलनेवाली कोई ईंजन नहीं है बल्कि यह दूसरों से संवाद करने का वह यंत्र है जिसका जीवन पर्यन्त उपयोग करना है। इसे वह पदार्थ देना है जिसके सेवन के लिए यह बना है। वे हैं प्राकृतिक-खुराक जिसमें फल, धान्यबीज, काष्ठफल और साग-सब्ज़ी हों।

ऐसी कोई बात नहीं है कि स्वास्थ्य दीर्घायु और ताकत पाने के लिए मनुष्य को मांस-सेवन की ज़रूरत है।

Frederick J. Stare, M.D. Chairman N. Dpt. at Harvard University said --

There is nothing nutritionally wrong with vegetarian diets: they provide a variety of legumes, particularly soybean products and nuts. Most of the Vegetarians consume generous quantity of milk. Good Vegetarian diets are very healthful.

हार्वर्ड यूनिवर्सीटी के पोषण विभाग के अध्यक्ष, फ्रेडेरिक जे.स्टेर, एम.डी. ने अपनी परीक्षण के बाद प्रमाणित किया है कि शाकाहरी भोजन में किसी भी तत्व की कमी नहीं है जो मनुष्य को जीने के लिए आवश्यक है। इसमें अपार फल, फूल, साग-भाजी है जो स्वास्थ्य को बनाये रखने में ज़रूरी है, खास कर सोया तथा बादाम, मूगंफली जैसे गिरीदार काष्टफल है। उचित और संतुलित शाकाहारी भोजन बड़ा ही स्वास्थ्यवर्धक है।

A study was undertaken in a remote Andean village by a group of medical researchers from Harvard University and the University of Quito in Ecuador. The oldest resident was a 121 years old man. There were several over 100 years old and 38 over the age of 75. Electrocardiogram (ECG) were done on the 20 oldest, and only two showed any evidence of heart disease. The article, which appeeared in New York Times goes on to say that Dr. Campell Moses, Medical Director of the American Heart Association, called the findings "extraordinary" and said that such electrocardiogram studies of a similarly elderly population in United States "would show 95 per cent with cardiovascular disease". The diet of these people was found to be pure vegetarian.

हावर्ड यूनिवर्सीटी तथा एक्वाडोर के कीटो यूनिवर्सीटी के अनुसंधान दल ने अपने प्रयोग में पाया कि आस-पास के ४०० गाँवों में जाँच करने के बाद देखा कि उस क्षेत्र के सबसे वृद्ध व्यक्ति की आयु १२१ साल की थी। बहुत से लोग १०० से ऊपर के थे। ३८ लोग ७५ से ऊपर के थे। इन लोगों में से २० सबसे वृद्ध लोगों के कारज्योग्राम-परीक्षण के बाद पाया गया कि केवल २ में दिल की बीमारी का छोटा चिह्न है। New York Times में एक लेख छपा था जिसमें American Heart Association के डाक्टर काम्पेल मोसज़ ने बताया कि यह बड़ा विचित्र था। यदि इस तरह का परीक्षण आमेरीकन नागरिक पर किया जाय तो पाया जायगा कि ९५ प्रतिशत लोगों में दिल की बीमारी का संकेत है। इनके तनदरुस्ति का राज़ यह बताया गया कि उस क्षेत्र के सभी लोग शाकाहारी थे और वे सामान्य से एक तिहाई मक्खन, पनीर जैसे चिकनाई लेते थे।

१९३४ की बात है – मेजर जेनरल सर रोबर्ट मैक कारिशन जो कभी ग्रैट ब्रीटैन के राज धराने के डाक्टर थे - वे कुछ समय से कश्मीर के हुज़ा लोगों के साथ कार्य कर रहे थे। ये जाति अपनी दीर्घायु और नैरोगिकता के लिए संसार भर में प्रसिद्ध थी । इनके भोजन में दाल चावल, बीन्स-काष्ठफल, ताज़े फल, ताज़ी सब्जी और बकरी के दूध थे। डाक्टर जी लिखते हैं कि

"I never saw a case of asthentic dyspepsia, of gastric or duodenal ulcer, of appendicitis, or mucus colitis or cancer... Among these people the abdomen over sensitive to nerve impressions, to fatigue, anxiety, or cold was unknown".

अर्थात मैं ने इन में ऐसी कोई भी बीमारी नहीं देखी जो सामान्य तौर पर ऐसे लोगों में पायी जाती है। अन्त में डाक्टर कारिशन ने बताया कि शाकहारी भोजन ही है जो हमको पूर्ण स्वाथ्य और लम्बी आयु प्रदान कर सकता है। Wartime Experience युद्ध के समय का अनुभव

Research was also undertaken in more economically advanced areas during times of national crisis. One such study took place in Denmark during the World War 1. The Government, realizing the possibility of acute food shortages sought the aid of Denmark's Vegetarian society. Experience

खोज, स्वास्थ्य और अर्थ दोनों ही पहलुओं पर किया गया। यह खोज प्रथमविश्व युद्ध के बाद ऐसे क्षेत्र पर किया गया जहाँ के लोग आर्थिक दृष्टि से अधिक सम्पन्न थे। इसी तरह की खोज डेनमार्क में युद्ध के दौरान किया गया था। जब उन देशों में सभी जहाजों पर रोक लगा दिया गया था जिसके कारण बाहर से राशन आदि ला नहीं सकते थे। सरकार को कुछ समझ नहीं आ रहा था। अन्थतः Denmark के vegetarian society से सहायता की माँग की गयी। इसके लिए डा० मीक्केल हिन्धेड को नियुक्त किया गया ताकि वे खाद्य प्रोग्राम का संचालन करे। डा० ने 'Journal of American Medical Association' में अपना विचार रखा। और यह पाया गया कि भोजन में रोटी, आलू, साग-भाजी, दूध और कुछ मात्रा में मक्खन होगा जो वहीं पैदा किया गया।

इसका नतीजा यह निकला कि डेनमार्क के लोग युद्ध के दिनों में पहले से बेहत्तर जीवन जीने लग थे, उनका स्वास्थ्य पहले से अच्छा था। मृत्यु का दर घट कर १७ प्रतिशत हो गया। इनका दैनिक खर्च भी घट गया कारण कि वे अन्न खुद पैदा करने लगे थे।

SATYARTHA PRAKASH of Swami Dayanand Saraswati ji

Mrs Rutnabhooshita Puchooa, M.A., P.G.C.E, Arya Bhooshan

Swami Dayanand was one of the greatest social reformers and spiritual leaders of the 19th century. He wrote 66 books of which 'Satyarth Prakash', his magnum opus, is the most important. Satyarth Prakash means the light of the meaning of truth. This book deals with a great variety of topics, which shows the wide range of Swamiji's knowledge and his amazing versatility.

At that time, Swamiji found that on account of illiteracy, the Hindus were a prey to all kinds of social evils such as child marriage, satipratha, no education for girls, widowhood as a curse or the women folk, superstitions, forced widowhood, caste system, polygamy, untouchability, purda system and unequal treatment of women. Swamiji believed that the panacea for all these ills was education of the masses. Consequently, in 'Satyartha Prakash' -- Swami Dayanand lays great stress on education – that of parents and children. He also writes about the great importance of Brahmacharya for body building and character building, and the acquisition of right knowledge through the Vedas.

The 'Satyarth Prakash' is even more relevant today than when it was first published on account of moral decay with social evils such as corruption, female infanticide and clash of caste and creed.

A copy of this book (Satyarth Prakash), left by an Indian soldier, namely Shri Bholanath Tiwari, in Mauritius and read by a few Mauritians had impressed the latter so much that they tried and tried to set up the Arya Samaj in Mauritius until finally they succeeded in doing so in the year 1910.

'Satyarth Prakash' contains 14 chapters called 'samoulass'. The first ten chapters (Part I of the book) are positive and affirmative, while Part II consists of four chapters which are mainly a critical inter-faith dialogue. Part II has often been criticized by those who have misunderstood Swamiji's purpose and intention.

Chapter 1

This chapter starts with a holy prayer. Then follows an explanation of the infinite names of God according to his attributes, actions and nature. For example: 'He is called

Brahma – Creator of the Universe,
Vishnu – All-pervading
Shiva – Blissful and Benefactor of all
Rudra – Punisher of the wicked whom He causes to weep
Akshara – Immortal, Omnipresent
Swar□t – Self-effulgent
Kalagni – Cause of dissolution of the world and Regulator of time
Chandrama – The true source of Happiness (from Kaivalya Upnishad)

Chapter 2

This deals with the 'Upbringing of Children'

Swamiji opens this chapter with a Sanskrit quotation from Satapatha Brahmana as follows: **"Mātriman Pitrimān Āchāryavān Purusho Veda"** which means -- "A person becomes learned only when he/she has 3 proper instructors – the mother, the father and the preceptor (Guru)."

Mātrimān – that man who has got a good and virtuous mother.

Swami Dayanand Saraswati ji strongly believed that "Blessed is that family and most fortunate is that child whose mother and father are equipped with righteousness and learning." He maintained that nobody else can bestow upon children so much affection and so much regard as the mother. Moreover, nobody else can give better advice and do more good to the children than the mother. The mother has the greatest influence on the child; blessed indeed is that mother who teaches good manners to mould the character of the child right from the time of conception till the child acquires full education.

In this chapter, Swamiji enjoins that all people, all children have a right to education irrespective of class, colour, creed, caste and sex. All children must be taught first at home by the parents, then sent to schools with best teaching staff of males and females, with separate schools for boys and girls. Swamiji also advised that mothers, fathers and preceptors should maintain strict discipline over their children and pupils, and not give them excessive love.

Swamiji also quotes from Chanakya Niti (II-11)

"Mātā satruh pita veiri yéna bālo na pathitah.
Na shobhaté sabhā madhyé hans madhyé vako yathā."

Meaning

"Those parents who do not give proper education to their children are the greatest enemies of these children. The latter are disgraced in the society of learned persons just as a crow in the company of swans."

Moreover, Swamiji upholds that it is truly the main duty, the highest religious obligation, a laudable achievement of parents that they should devote all their energy, mind and wealth to the imparting of true knowledge, piety, culture and excellent instruction to their children.

Chapter 3

In this chapter, Swamiji writes on 'Education'. He elaborates on the subject-matter (various branches of knowledge) to be taught as well as the method of study and teaching. According to him, it is the main duty of the mother, the father, the preceptor and relatives that they should adorn their children / students with the ornaments of highest education, training, qualities, actions and habits. The soul of a human being can never be beautified by wearing ornaments made of gold, silver, precious stones etc.

Children must be given an all-round (holistic) education comprising of physical, academic, social and spiritual components. They must be taught breathing and other exercises (like yoga), languages, mathematics and sciences. They should also be taught 'yamas' (virtues taught by self-control) namely non-violence, truthfulness, honesty, sense control, non-greed and no taking of drugs and alcohol. They must also learn 'niy□mas' (human values caught by habit) such as cleanliness, contentment, patience/sacrifice and endurance, acquisition of knowledge and development of intellect, and faith in God.

Students must also know about the four 'varnas' (classes) of society and the duties of each 'varna'. Moreover, they must have knowledge of the four ashrams (stages) of life and the duties prescribed for a person at each stage of life.

Teenagers must be taught philosophy; they must study the six systems of philosophy together with the commentaries on each system, they must especially know about the various ways of acquiring true knowledge.

The youth must also know about the four Vedas. ***..... to be continued***

पृष्ठ ३ का शेष भाग

स्वामी श्रद्धानन्द मृत्यु से नहीं डरे। धर्मवीर पं० लेखराम ने मृत्यु को गले लगाया, लाला लाजपतराई और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने मृत्यु से खेला। इसी प्रकार अनेकों ने आत्मा की अमरता के कारण धर्म पर हँसते-हँसते जीवन त्यागा। प्रिय पाठको, जब तक हम अपने प्रभु का स्मरण नहीं करेंगे, किए हुए कर्मों का स्मरण नहीं करेंगे, अपने सामर्थ्य का ध्यान नहीं करेंगे, तब तक हम आत्मा को नहीं समझेंगे। पाप के घेरे में घिरे रहेंगे। हम अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ें। असत्य से सत्य की ओर बढ़ें। मृत्यु से अमरता की ओर कदम बढ़ाएँ, तभी हमें अविनाशी-सुख-शान्ति प्राप्त हो सकेगी। आत्मा गद्‌गद् हो जाएगा। अहंकार विलीन हो जाएगा। शरीर नाशवान है और आत्मा अमर है। शरीर बनता है और बिगड़ता है। बन-बन कर बिगड़ना प्रकृति का स्वभाव है। इसी प्रकार शरीर का बनना और बिगड़ना स्वाभाविक है। स्वभाव के लिए कहा गया है – स्वभावः मूर्धनि वर्तते - स्वभाव को टाला नहीं जा सकता। स्वभाव सदा अटल रहता है। यही अवस्था नर शरीर की है। शरीर की पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच प्राण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ये उन्नीस के उन्नीस सब तत्व बने हुए हैं। बीसवें तत्व आत्मा है जो बना हुआ नहीं है।

धर्म कहता है – हे मानव कर्म करना, तेरा कर्तव्य है। फल पर तेरा अधिकार नहीं। परमात्मा तुझे फल स्वयं प्रदान करेगा। अपने जीवन की डोर प्रभु को सौंप कर देख कितना आनन्द छिपा है समर्पण में। प्रभु की हार कभी भी नहीं हो सकती। प्रभु की जीत भक्त की जीत है। यदि मन से व्यक्ति विजयी हो गया, तो उसे कोई हरा नहीं सकता।

cont. from pg 1

Ainsi on peut s'assurer de sa protection et de sa sécurité. En conséquence on peut vivre en paix, progresser dans la vie et se consacrer à la spiritualité.

Il y aussi les côtés négatifs suivants dans la société :-- (i) Quand les gens à la tête d'un pays, d'une institution ou d'une entreprise commettent des excès (des abus de pouvoir, la fraude, la corruption et autres méfaits), ils y apportent la ruine et la désolation.

En outre, quand une personne assoifée de pouvoir, de renom ou de publicité, passe tout son temps dans les activités sociales et démissione de ses responsabilités familiales, la famille entière souffrent. Surtout ce sont les enfants qui deviennent les plus grands victimes. Ils ne progressent pas dans leurs études et deviennent des délinquants.

"Asambhootim" ou "vināsham" (Vyaktivāda) signifie l'individualisme et l'ascétisme.

Afin de se préparer à affronter la vie et jouer pleinement son rôle dans la société, chaque individu doit d'abord se consacrer à son développement personnel. En d'autres mots, il doit commencer par l'acquisition de l'éducation académique et spirituelle, agrementée des valeurs humaines. Puis il doit avoir une formation professionnelle, c'est-à-dire un enseignement particulier lui permettant d'acquérir certains réflexes et développer en lui certaines aptitudes pour faire épanouir ses talents cachés /son savoir-faire.

Ainsi quand les hommes s'engagent dans la culture de l'individualisme et agissent selon leurs vocations ils pourront faire des progrès énormes dans différents domaines ou champs d'activités de la vie. Ce sont de tels individus qui forment partie de la société. Sans eux la société ne peut exister. Ce sont de telles personnes qui se sacrifient pour la société et le pays.

Parmi ceux qui vont à l'extrême dans leurs tentatives, certains font une immense fortune et deviennent de grands hommes d'affaires.

D'autres excellent dans d'autres domaines et émergent comme des génies, de grands hommes de lettres, des érudits, des scientistes, des artistes accomplis, des hommes d'état hors pair, des légistes ou des médecins de renom entre autres.

Ceux qui se consacrent à la culture physique pourront acquérir une force herculénne et ceux qui pratiquent le sport deviendront des athlètes de renommée mondiale.

En dernier lieu il y a l'ascétisme. Ceux qui se détachent de tout lieu familial et du monde matériel et mènent une vie austère, deviennent des ascètes, doués de plusieurs vertus.

N'oublions pas que l'individualisme chez certaines personnes signifie l'égoisme et l'intérêt personnel. Ce sont des qualités indésirables et une pratique qui est au détriment de l'humanité.

En outre, il y a des paresseux, qui pour mener une vie facile, se font passer pour des ascètes. Ce sont de faux dévots, des charlatons ou des personnes malhonnêtes qui escroquent des honnêtes gens en trompant leur bonne foi. Ils sévissent presque toujours impunis. Ce sont de vrais fossoyeurs de la société. De toute façon, ils n'échapperont pas à la justice suprême de Dieu.

Ce verset du Yajur Veda nous transmet ce message très pertinent : Le but ultime de la vie ne peut être acquis au moyen de 'Samājvād' ou 'Vyaktivād' seulement. C'est en pratiquant un amalgame de ces deux modes de vie qui se complémentent et en excluant leurs côtés négatifs que l'on pourra y arriver.

Ainsi par la culture de l'ascetisme (vayrāgya) on peut vaincre la mort et par la dévotion spirituelle (bhakti) on peut atteindre le bonheur suprême / la libération de son âme (param anand/moksha) – le but ultime de la vie.

बिहार में एक पोखर का नामकरण – 'इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ'

डॉ० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ जी,

आप मॉरीशस के एक समर्पित हिन्दी सेवी, वरिष्ठ और विख्यात हिन्दी साहित्यकार हैं। मेरे गाँव को यदि आप अपने पूर्वजों का गाँव माने तो कृपा होगी । हमने एक अपने पोखर (द्रदृदङ्ग) का नाम आपके नाम पर रख दिया है। नामकरण भी कर दिया है। यह पोखर उसी समय का है, जब हमारे पूर्वज लोग मॉरीशस गए थे। सहस्नेह प्रणाम।

आपका छोटा भाई,
कृष्ण मुरारी सिंह, ग्राम बरमा, पोस्ट
कैथाना, ज़िला रोखपुरा, बिहार ८१११०७, भारत

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

Appeal to Members & Well-wishers

Dear Brothers & Sisters

CONSTRUCTION OF DAV COLLEGE, ROSE BELLE

We wish to inform you that the construction works for DAV College, Rose Belle has started. Arya Sabha relies heavily on the donations from our members and well-wishers for major projects.

We are hereby making a humble appeal to you to contribute either in cash or kind (materials) to bring this project to fruition. You may send your contribution as follows:

(i) By cheque drawn in the name of ARYA SABHA MAURITIUS, **or**
(ii) Credit our bank account no. 1010603 with Barclays Bank PLC, **or**
(iii) Contact Mr. Raj Sobrun, Manager (212 2730 office; 5768 5923 mobile) to arrange for site delivery of contributions in kind.

Receipts for the donations will be issued accordingly.

Your generosity is part of selfless service (nishkāma sevā) which will be your contribution towards building the future of our children, generations to come.

Thanking you.

Dr. O.N.Gangoo	S. Peerthum	R. Gowd
President	*Secretary*	*Treasurer*
5257 2694	5257 3817	5782 7314

हमारा राष्ट्रीय कर्त्तव्य

..... हम और आपको अति उचित है कि
जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना,
अब भी पालन होता है, आगे होगा,
उसकी उन्नति तन-मन-धन से
सब जने मिल के प्रीति से करें ।
सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ से उद्धृत

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए., ओ.एस.के, सी.एस.के., आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम,आर्य भूषण*
(४) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर, *डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण*
(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.